भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में प्रादेशिक विकास

(Geographic Perspective of Regional Development)

भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में प्रादेशिक विकास

(Geographic Perspective of Regional Development)

संपादक

डॉ. दिनेश कुमार

सहायक आचार्य, भूगोल विभाग,

टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

राजस्थान।

2023

सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स

प्रकाशक

सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स
कुलचन्द्र, हनुमानगढ (राजस्थान) 335526
94611-09470, 83063-09470
publicationssiddhivinayak@gmail.com

ISBN : 978-81-965118-1-4

© सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स

प्रथम संस्करण (2023)

मूल्य : ₹ 1000.00

शब्द संयोजक एवं डिजाइन : कमल जीत सिंह (तकनीकी सहायक)

मुद्रक : जैन ऑफसैट प्रिण्टर्स, संगरिया

वैधानिक चेतावनी

- शोध आलेख/चैप्टर/अध्याय में दिए गए विचार लेखकों/शोधकर्त्ताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए प्रकाशक/संपादक/सह–संपादक जिम्मेदार नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र हनुमानगढ, राजस्थान होगा।
- इस पुस्तक का प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना पुनः प्रकाशन/फोटो कॉपी/स्केल इत्यादि माध्यमों से पुनर्मुद्रण करना कॉपीराइट अधिनियम के अनुसार दंडनीय अपराध है।

S.N.	शीर्षक –लेखक	Pages
	भूमिका	(vii) - (viii)
1	प्रादेशिक विकास एवं नियोजन –डॉ. उपेन्द्र कुमार	1 – 9
2	प्रादेशिक विकास में अनुसूचित जनजातीय महिलाओं की भूमिका –डॉ. उर्मिला सभरवाल	10 – 21
3	भारत के कृषि विकास में क्षेत्रीय असंतुलन एवं नियोजन की रणनीति –डॉ. अनिल कुमार सिन्हा	22 – 38
4	पर्यावरण एवं सतत पोषणीय विकास –डॉ. सीमा सिंह	39 – 46
5	पर्यावरण संरक्षण –डॉ. आनन्द लाल	47 – 55
6	क्षेत्रीय संसाधनों के आंकलन–विश्लेषण में सुदूर संवेदन तकनीक का अनुप्रयोग –नारायण लाल	56 – 68
7	भारत में घटता भू–जल स्तर : एक विकट समस्या –राज कुमार वर्मा	69 – 78
8	भूमि संसाधन प्रबंधन और योजना में रिमोट सेंसिंग और जीआईएस का अनुप्रयोग –अनिल कुमार, अनु ज्याणी	79 – 95
9	विश्व में संसाधन – संसाधन उपयोग, संरक्षण व प्रबंधन –जुगल किशोर सैनी	96 – 102

10	**ग्रामीण विकास एवं छत्तीसगढ की सुराजी ग्राम योजना** –डॉ. श्रीमती कल्पना लाम्बे	103 – 112
11	**संरक्षण कृषि के माध्यम से संसाधन प्रबंधन** –डॉ. नरेन्द्र सिंह	113 – 121
12	**ऊर्जा संरक्षण : चुनौतियाँ और समाधान** –डॉ. वेद प्रकाश	122 – 142
13	**औद्योगीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव : एक अध्ययन** –अंजूलिका, डॉ. रूपेश कुमार मिश्रा, कादम्बरी मिश्रा	143 – 153
14	**इटावा जनपद के भौगोलिक परिदृश्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन** –प्रो. (डॉ.) प्रेम प्रकाश राजपूत, डा. ओम जी, डॉ. रूपम राजपूत	154 – 172
15	**संसाधन उपयोग, संरक्षण व प्रबंधन** –डॉ. गुड़िया कुमारी	173 – 181
16	**विश्व तापमान में वृद्धि** –डॉ. रूपेश कुमार मिश्रा, डॉ. कादम्बरी मिश्रा, अंजूलिका	182 – 187
17	**कृषि पशुपालन : सामाजिक–आर्थिक विकास में 'सोजत नस्ल' का योगदान (सोजत) पाली जिले के विशेष संदर्भ में** –अहमद मसाहिद	188 – 198
18	**INTEGRATED AREA DEVELOPMENT PLANNING** – Dr. Ajay Tiwari	199 – 216

भूमिका

*'**प्रा**देशिक विकास' एक व्यापक शब्द है, जो सदैव प्रादेशिक समस्याओं, मुद्दों और विकास की भावी संभावनाओं पर केंद्रित रहता है। प्रादेशिक असमानताओं, भिन्नताओं, विषमताओं, गैरबराबरी के असंतुलित विकास और क्षेत्रीय चुनौतियों को ध्यान में रखकर आर्थिक, सामाजिक–सांस्कृतिक स्तर पर आ रही चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार विकास का व्यापक खाका ही प्रादेशिक विकास की रूपरेखा है। इस रूपरेखा के क्रियान्वयन के प्रतिफल स्वरूप प्राप्त होने वाली उपलब्धियाँ प्रादेशिक विकास है। प्रादेशिक विकास का तात्पर्य प्रदेश के संतुलित एवं समन्वित विकास से है, जहाँ प्रदेश के प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग निर्धारित हो सके। प्रदेश का विकास नियोजित एवं बाह्य पूँजी निवेश द्वारा भी किया जाता है। हालांकि ऐसे प्रदेश जहाँ प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता होती है और उच्च स्तरीय तकनीक उपलब्ध है वहाँ आर्थिक विकास की गति भी तीव्र होती है। इसी के अनुरूप सामाजिक विकास भी तीव्र होता है, अर्थात प्रदेश का संतुलित एवं समन्वित विकास होना आसान होता है। ठीक इसके विपरीत जहाँ, प्राकृतिक संसाधनों का अभाव होता है, वहाँ विकास की गति अवरुद्ध रहती है। इस तरह आर्थिक विकास प्रदेश या देश के प्राकृतिक संसाधनों तथा संसाधनों के मानवीय उपयोग की क्षमता पर निर्भर करता है। वैश्विक स्तर पर संसाधनों के वितरण में व्यापक विषमता पायी जाती है, साथ ही मानवीय संसाधन तथा मानवीय क्षमताओं में भी अंतर पाया जाता है। इस कारण आर्थिक विकास में विषमता पायी जाती है।*

असमानता विकास का अंतर्निहित गुण है और यह एक भौगोलिक सत्य है कि आर्थिक विकास और असमानता साथ–साथ चलते हैं, लेकिन विकास प्रक्रिया को नियोजित करके इस असमानता को कम किया जा सकता है।

प्रादेशिक विकास के लिए प्राकृतिक एवं सामाजिक–सांस्कृतिक संसाधन रूपी ताने–बाने की आवश्यकता रहती है जो देश व काल (Space & Time) के अनुसार परिवर्तनशील रहते हुए पर्यावरण पर अनुकूल/प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप विकास कुछ क्षेत्रों में केन्द्रीभूत होता गया और क्षेत्रीय व संस्तरीय विषमताओं में तीव्र वृद्धि हुई। इसके चलते अन्तःप्रदेशीय व अन्तराप्रदेशीय असन्तुलन तथा विविध क्षेत्रों व सामाजिक वर्गों में तनाव बढ़ा है। जिसके परिणाम स्वरूप विकास के विविध आयामों के साथ–साथ तत्सम्बन्धी विषमताओं व उनके लिए उत्तरदायी कारकों के विवेचन–विश्लेषण की आवश्यकता को बल मिला है।

प्रादेशिक विकास की बात यदि भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में की जाए तो यह कहा जा सकता है कि प्रादेशिक विकास प्रादेशिक भूगोल की विषय वस्तु है। प्रादेशिक भूगोल किसी ऐसे क्षेत्र विशेष का भूगोल है जो अन्य भौगोलिक क्षेत्र से किसी ने किसी आधार पर अलग होता है, जिसे इन आधारों पर वर्गीकृत किया जा सके। आलोच्य पुस्तक प्रादेशिक विकास को नए सिरे से समझने के लिए अत्यंत उपयोगी होगी। प्रादेशिक विकास का भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में आकलन करने का उद्देश्य प्रस्तुत संपादित पुस्तक के द्वारा आप सभी विद्वतजनों के माध्यम से संपन्न हो रहा है अतः इस अतुलनीय सहयोग के लिए आपका कोटि–कोटि धन्यवाद। भौगोलिक शोध तथा शोधकर्ताओं की वीथी अत्यंत जाज्वल्यमान प्रतीत होती है। भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में प्रादेशिक विकास को रेखांकित करती यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए अत्यंत गर्व का अनुभव कर रहा हूँ।

श्रावण कृष्ण द्वितीया 2080 वि. गुरुवार

डॉ. दिनेश कुमार